आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2716 • उदयपुर, गुरुवार 02 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

भिण्ड (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 22 मई 2022 को श्रीमती विमला देवी स्पेशल विद्यालय जामना, भिण्ड मध्यप्रदेश में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् शिवभान सिंह जी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 61, कृत्रिम अंग वितरण 36, कैलिपर वितरण 26 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रवीण कुमार जी फुलपगारे (ए.डी.एम.साहब, जिला भिण्ड) अध्यक्षता श्रीमान् शिवभान सिंह जी (संस्थापक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् शिवप्रताप सिंह जी भधोलिया (समन्वयक जन अभियान परिशद), श्रीमान् पवन जी भास्त्री (भागवताचार्य समाजसेवी), श्रीमान् उपेन्द्र जी व्यास (समाजसेवी), श्रीमान् हर्शवर्धन जी (सक्षम संस्थान, भिण्ड) रहे।

डा.रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भंवर जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री मुकेभा जी भोर्मा (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री कपिल जी व्यास, श्री हरीभा सिंह जी रावत (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (विडियोग्राफी) ने भी सेवायें दी।

बरेटा मानसा (पंजाब) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 15 व 16 मई 2022 को सचखण्ड गुरूद्वारा साहिब बहादुर (बरेटा मानासा) में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता बिग हॉप फाउंडेशन बरेटा, मानसा (पंजाब) रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 207, कृत्रिम अंग वितरण 169, कैलीपर वितरण 24 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् जसविंदर सिंह जी (विधायक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् मनिन्दर सिंह जी (अध्यक्ष, बिग हॉप फाउंडेशन), श्रीमान् सुरेश जी, श्रीमान् रणजीत सिंह जी, श्रीमान् कुलदीप सिंह जी (समाजसेवी) रहे।

नेहा जी अग्निहोत्री (पी.एन.डो.), नरेश जी वैश्णव, उत्तम सिंह जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में अखिलेश जी अग्निहोत्री (शिविर प्रभारी), श्री मनीश जी हिन्डोनिया, श्री प्रकाश जी डामोर, श्री कपिल जी व्यास (सहायक) ने भी सेवायें दी।

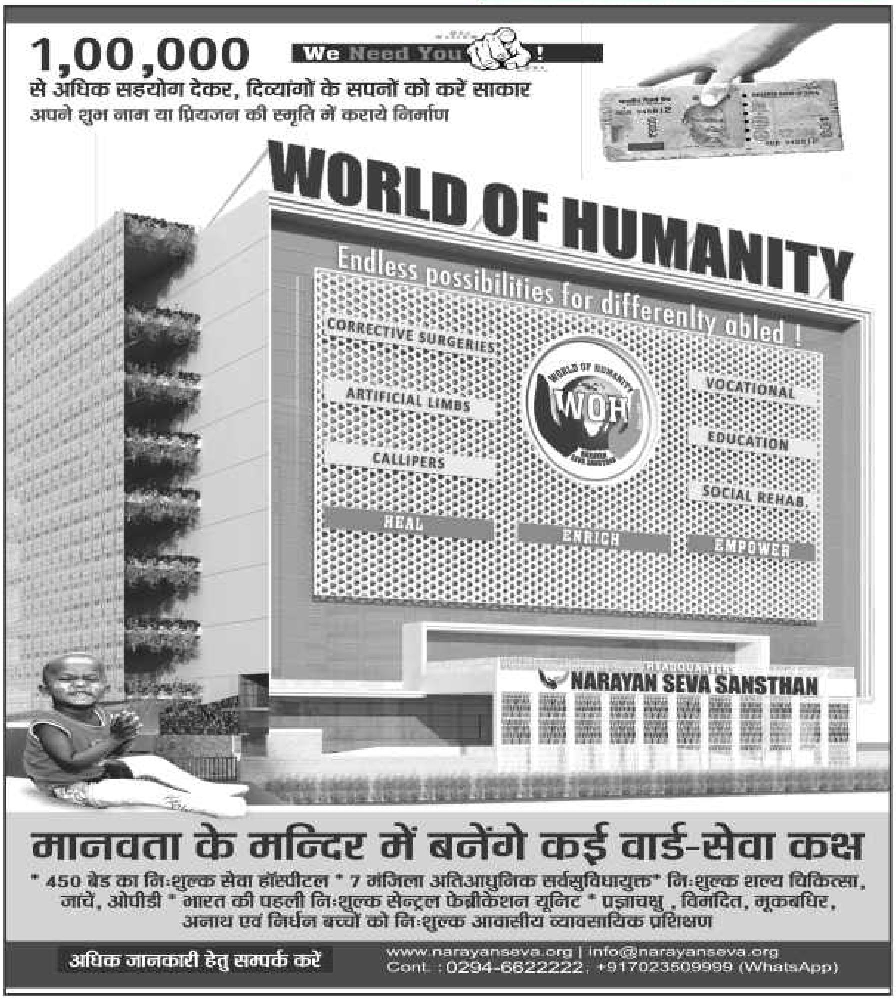

जनक को आत्मज्ञान

शरीर ही नहीं, संसार के सब पदार्थ नश्वर हैं। शास्त्रानुसार न कोई अधिकारी ही सिद्ध होता है और न कोई अधिकार योग्य वस्तु ही। अतएव व्यक्ति को अहंकार वश कुछ भी अपना मानने से बचना चाहिए। सभी कुछ उस परमपिता का है।

महाराज जनक के राज्य में एक तपस्वी रहता था। एक बार किसी बात को लेकर जनक उससे नाराज हो गए। उन्होंने उसे अपने राज्य से बाहर चले जाने की आज्ञा दी। इस आज्ञा को सुनकर तपस्वी ने जनक से पूछा, महाराज, मुझे बता दीजिए कि आपका राज्य कहां तक है क्योंकि तब मुझे आपके राज्य से निकल जाने का ठीक–ठीक ज्ञान हो सकेगा। महाराज जनक स्वभावतः विरक्त तथा ब्रह्मज्ञानी थे। तपस्वी के इस प्रश्न को सुनकर वह सोच में पड़ गए। पहले तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर ही उन्हें अपना राज्य तथा अधिकार दिखा। फिर मिथिला नगरी पर वह अधिकार दिखने लगा। आत्मज्ञान के झोंके में पुनः उनका अधिकार घटकर प्रजा पर फिर अपने शरीर में आ गया और अंत में कहीं भी उन्हें अपने अधिकार का भान नहीं हुआ। उन्होंने तपस्वी को अपनी स्थिति समझाई और कहा, मेरा किसी वस्तु पर भी अधिकार नहीं है। इस बात पर तपस्वी को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, महाराज आप इतने बड़े राज्य को अपने अधिकार में रखते हुए किस तरह सब वस्तुओं से तटस्थ हो गए हैं और क्या समझकर पहले पृथ्वी पर अधिकार की बात सोच रहे थे? जनक ने कहा, संसार के सब पदार्थ नश्वर हैं। शास्त्रनुसार न कोई अधिकार ही सिद्ध होता है और न कोई अधिकार योग्य वस्तु ही।

अतएव मैं किसी वस्तु को अपना कैसे समझूं? मैं अपने संतोष के लिए कुछ भी न कर देवता,पितर, भूत और अतिथि–सेवा के लिए करता हूं। अतएव पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश और अपने मन पर भी मेरा अधिकार नहीं है। जनक के इन वचनों के साथ ही तपस्वी ने अपना चोला बदल दिया। वह बोला, महाराज, मैं धर्म हूं। आपकी परीक्षा के लिए तपस्वी वेश में आपके राज्य में रहता आया हूं। अब भलीभांति समझ गया कि आप सत्वगुणरूप नेमियुक्त बह्माप्रतिरूप चक्र के संचालक हैं।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

सुग्रीव जी ने सोचा अंगद सम्वद मधुबन के फल खाइये। युवराज की आज्ञा लेकर के और सुग्रीव जी बड़े राजी हो गये। और अपने रीछ पति जामवंत जी महाराज जिनकी बेटी जामवंती का विवाह द्वापर युग में कृष्ण भगवान की पटरानी बनी थी। जामवंत जी की बेटी जामवंती वो जो रीछ पति इतने अजर–अमर द्वापर में भी थे त्रैता में भी थे। जामवंत जी महाराज ने राम जी के चरणों में प्रणाम किया। सुग्रीव जी ने प्रणाम किया हनुमान जी ने प्रणाम किया। प्रभु हनुमान जी काम करके आ गये गढ़ जीत गये। हाँ तो भगवान ने कहा।

पुलक अति गाथा क्या क्षण रहे होगे? क्या मन रहा होगा? क्या आनन्द रहा होगा? आप और हम भी उस आनन्द की अनूभूति प्रतिदिन कर सकते हैं। ध्यान के द्वारा प्रभु भक्ति के द्वारा अपने व्यवहार में सुधार करने के द्वारा सबको प्रेम करने के द्वारा अपने –अपने भोगों का अन्त करना है। कहना है के भाई हमें भोग –भाव छोड़ना है। और द्रश्टाभाव ज्यादा लाना है आइये दो मिनट का ध्यान करलें। पलकों को धीरे से बन्द करलें। अपनी श्वासों को देखें जो श्वास प्रभु ने दया करके श्वसन तंत्र में दिया है। जब तक श्वास चल रहा है सब अच्छा है। कभी आधा मिनट भी के लिए भी श्वास रुक जावे तो दिन को भी रात के तारे नजर आने लग जाते हैं। श्वसन तंत्र का एक अंग है हमारा नाक। नीचे मत करना, नाक ऊँची रखना। ये तो सब कहावते हैं भाया लेकिन नाक से श्वास हमारी जाती है। देखो बाबू इसलिए अपन रामायण पढ़ रहे हैं। जब केवट के नाव में चढ़ाना पहले राम भगवान ने सीता जी को चढ़ाये और फिर खुद चढ़े ये व्यवहार की कथा, ये आनन्द की कथा और ये उस प्रेम की कथा जहाँ बार –बार भगवान कहते हैं कि तुम मम् प्रिय भरत सम भाई। हे हनुमान जी तुम तो मेरे भरत जैसे लाड़ले हो।

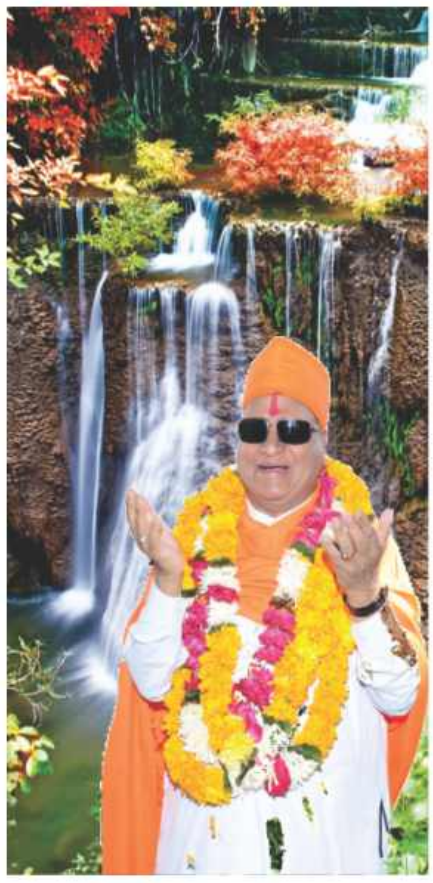

उम्मीद से दूर हुई उदासी

रामकेवल–शेषावती निवासी काशा भटेरा जिला –सुल्तानपुर (उ.प्र.) खेतीहर साधारण परिवार का 6 वर्षीय पुत्र शैलेष जन्म से ही दोनों पाँव में पोलियो रोग के कारण उठने–बैठने से लाचार है। गाँव के आस–पास के शहरों में इलाज भी करवाया पर कोई कारगर नहीं हुआ। नारायण सेवा संस्थान के रतनलाल डिडवाणिया अस्पताल में इलाज के लिए बेटे को लेकर आए। श्री रामकेवल ने बताया कि गरीबी और ऊपर से बेटे के इस दुःख से पूरा परिवार ही टूट गया। इसी वर्ष उनके पड़ोस के गाँव के राम अचल गुप्ता ने हमें नारायण सेवा संस्थान में बेटे की जाँच की सलाह दी। वे भी यहाँ से इलाज करवा कर खुशी–खुशी लौटे थे। इस आशा की किरण के सहारे हम यहाँ आए। बायें पाँव का ऑपरेशन हो चुका है। दायें पाँव के ऑपरेशन किया गया, ऑपरेशन दवा, खाना–पीना और रहने का एक पैसा भी खर्च नहीं हुआ। डॉक्टर की दिखाई उम्मीद ने हमारी उदासी को दूर कर दिया है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

किसी को देना, सहयोग करना, बांटना आदि कार्य प्राकृतिक है। प्रकृति स्वयं पांचों तत्वों का निरंतर व स्वभाववश दान करती रहती है। प्र.ति के इन तत्वों से निर्मित रचनायें यथा पेड़, पहाड़ आदि भी स्वभाव से ही दानी होते हैं। जो स्वाभाविक रूप से देता रहता हैं वह नैसर्गिक व औढ़रदानी कहलाता है।

यों तो मानव भी प्रकृति के इन पंचतत्वों से ही निर्मित है, इसलिये इसे भी स्वभाववश दानी होना चाहिये। अनेक लोग है भी किन्तु सभी का स्वभाव प्राकृतिक रूप से देने का विकसित नहीं हो पाता है। क्योंकि मनुष्य की प्रकृति के तत्वों से ही सृजित है तो प्रकृति के गुणों का समावेश तो होना ही चाहिये। फिर भी वातावरण के प्रभाव से उसका दाता रूप कभी–कभी पिछड़ जाता हैं। इस कमी को दूर करने के लिए ऋषि परंपरा ने एक और विधि सृजित की है। जो प्राकृतिक भाव से दान न कर पाये हों उनके लिये संकल्प भाव से देने की व्यवस्था की गई है। किसी भी संकल्प से देना भी दान ही है। मानव चाहे स्वभाव से दे या संकल्प से दोनों का लाभ दाता व भोक्ता दोनों के लिए समान ही है। अतः महत्त्व यह नहीं है कि कैसे दे? मुख्य बात है कि दें।

कुछ काव्यमय

प्रकृति सा दानी
और कहाँ मिलेगा ?
जो दाता है
वही पूर्ण खिलेगा।
देना जीवमात्र के लिये
संदेश है प्रकृति का।
न देकर स्वयं ही रखना
प्रतीक है विकृति का।

अपनों से अपनी बात

विवेक जागृत करें

हमारे जीवन में राम कृष्ण कथा से उतरना चाहिए। क्रोध लेकर के परशुराम जी पधारे और राम भगवान की शीतलता से वो गद्‌गद् हो गये। लक्ष्मण जी का उपहास–आप तो बचपन में सुख चाह रहे हो। पहले राधेश्याम रामायण में बहुत पढ़ते थे। परशुराम जी ने कहा– ऐ राजा जनक जल्दी बता। ये धनुष किसने तोड़ा? यदि तू बताने में देरी करेगा। तो तेरे सारे राज्य को मैं नष्ट कर दूँगा। इतनी बार क्षत्रिय विहीन कर दिया। हे प्रभु, हे परमात्मा।

हमारे श्रीराम भगवान, हमारे आराध्य भगवान मंद–मंद मुसकुरा रहे हैं। लक्ष्मण जी कहा कि हे मुनिवर!

ऐसे धनुष तो हमने बहुत बार तोड़ दिये। शेषावतार लक्ष्मण जी की भुजायें फड़क रही हैं। शेषावतार लक्ष्मण जी कह रहे हैं– हे मुनिवर! ये तो आपका वेश देख करके बहुत आदर करते हैं। और आगे भी आदर करते रहेंगे हमारे रघुवंश वाले कभी ब्राह्मण पर, नारी पर, साधु पर हाथ नहीं उठाते हैं।

हे मुनिवर! इतना गुस्सा क्यों? अरे! ये धनुष तो बहुत पुराना था, जंग लगा था वर्षों से। राम जी क्या करे? मेरे बड़े भाई साहब का कसूर क्या बताओ तो सही? जैसे ही उन्होंने छुआ और ये टूट गया और तो और बार–बार फरसे को घुमाते हैं। विश्वामित्र जी ने लक्ष्मण जी के हाथ को तनिक दबाया।

शेषावतार तनिक चुप होइये और राम भगवान के वक्ष स्थल पर जैसे परशुराम की दृष्टि गई। बचपन में आपने पढ़ा होगा।

का विष्णु घटि गयो।
जो भृगु जी मारी लात का।।

दृष्टि गई प्रभु जी के चरणों के बीच में। अरे! ये तो शांताकारम् है, ये तो भुजगशयनं है। ये नारायण भगवान के अवतार हैं, प्रणाम हो। बोलिये राम भगवान के अवतार की जय हो। परशुराम जी पधारे गये।

–कैलाश 'मानव'

संगत का असर

किसी शहर में एक सेठ रहता था। आप और हम जानते हैं। संगत का कितना असर होता हैं। संगत का असर समझने के लिए ये छोटा सा प्रसंग समझना जरूरी है। सेठ का एक बेटा था। बेटे की दोस्ती कुछ ऐसे लड़कों के साथ थी। जिनकी आदत बहुत खराब थी। सेठ को ये सब अच्छा नहीं लगता था। सेठ ने अपने बेटे को समझाने की बहुत कोशिश की पर सेठ कामयाब नहीं हुए। जब भी सेठ उसको समझाने की कोशिश करते, बेटा कह देता मैं उनकी गलत आदतों को नहीं अपनाता। इस बात से दुःखी होकर सेठ ने अपने बेटे को सबक सिखाना चाहा। एक कोई उदाहरण देना चाहा। उसके हृदय में उतर जाये और वो बुरी संगत

छोड़ दे।

सेठजी बाहर से कुछ सेब खरीद कर लेकर आये। उन्होनें एक साथ सेब को रखे। सेब में एक सड़ा हुआ सेब भी लेकर आये। ला कर सेठ ने अपने लड़के को सेब दिए। कहा इनको अलमारी में रख दो। इन सबको हम कल खायेंगे। जब बेटा सेब देखने लगा तो एक सेब सड़ा हुआ देखकर सेठ से बोला ये सेब तो सड़ा हुआ हैं। सेठ ने बोला कोई बात नहीं कल खायेंगे, कल देखेंगे। अभी तुम रख दो।

दूसरे दिन सेठ ने अपने बेटे से सेब निकालने को कहा। उसके बेटे ने जब सेब निकाली, तो आधे से ज्यादा सेब सड़े हुए थे। सेठ के लड़के ने कहा इस एक सेब ने तो बाकी सेबों को सड़ा दिया हैं। तब सेठ ने कहा ये सब संगत का असर है।

बेटा इसी तरह गलत संगत से अच्छा आदमी भी खराब हो जाता है, गलत काम करने लगता है। गलत संगत को छोड़ दो बेटा, बेटे के समझ में बात आ गयी। और उसने वादा किया कि अब वो गलत संगत में नहीं जायेगा। हमेशा अच्छी संगत में ही रहेगा। आप सबको और हम सबको ध्यान देना चाहिए। **– सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

शिविर में पी.जी.जैन दिन भर साथ रहे। वे भी सेवा की विभिन्न गतिविधियों में अपना योगदान देकर बहुत खुश थे। कल्पना के साथ कुछ अन्य लोग मिल गये और महीनों से नहीं नहाये को साबुन रगड़ रगड़ कर स्नान करवाया। इस बार का शिविर पहले की अपेक्षा अत्यधिक संतोषप्रद रहा। पी.जी.जैन उसके साथ ही घर लौटे। कैलाश ने उन्हें भोजन पर आमन्त्रित किया तो वे भाव विह्वल हो उठे। बोले –26 साल से वे ऐसी किसी सेवा भावी संस्था को ढूंढ रहे थे जो भेदभाव से ऊपर उठ कर कार्य करे। नारायण सेवा में यह सब गुण देखकर ही वे इससे जुड़े हैं। इतना कहने के बाद जो वे बोले उससे इनके रिश्ते ही बदल गये। जैन ने कहा कि उन्हें भगवान ने सब कुछ दिया है मगर बहन नहीं दी। आपके यहां आकर कमला का स्नेह पा ऐसा महसूस हो रहा है जैसे यह कभी भी पूरी हो गई। कमला पास ही खड़ी थी, उनके इतना कहते ही वह भी भावुक हो उठी और उनके चरण स्पर्श कर बोली –आज से आप मेरे पूज्य भाई हैं। जैन ने कमला को ऊपर उठाया और कहा –अब मुझे सब कुछ मिल गया है, आज से मैं जीवन भर आपके साथ हूं, अब मुझे भी नारायण सेवा ही करनी है।

कलेक्टर ने प्रताप नगर स्थित कार्यालय में फोन कर दिया था जिससे नारायण सेवा का रजिस्ट्रेशन सोसाइटी एक्ट के तहत हो गया और रजिस्ट्रेशन नंबर मिल गया। यह होते ही यू.आई.टी. में जमीन हेतु आवेदन भी कर दिया और कलेक्टर को भी सूचना दे दी।

इस बीच पी.जी. जैन ने आश्वासन दिया कि बाहर उनकी बहुत जान–पहचान है, कभी चन्दे की आवश्यकता हो तो वे कैलाश के साथ लेकर अच्छा चन्दा करवा सकते हैं। चन्दे की तो सदैव आवश्यकता रहती ही थी मगर सिर्फ इसी के लिये बाहर जाकर समय व्यतीत करना निरर्थक था। इस पर भी चन्दा हो ही जायगा या इनका उत्साह तब तक बरकरार रहेगा इसकी कोई गारन्टी नहीं थी।

अंश - 113

एसिडिटी में भुने हुए जीरे-काले नमक के साथ खाएं जामुन

जामुन में विटामिन ए,सी,आयरन, कैल्शियम, फास्फोरस आदि पोशक तत्व पाए जाते हैं। इसे डायबिटीज, पेट दर्द, गठिया और पाचन से जुड़ी, समस्याओं में फायदेमंद माना गया है।

किस रोग में कैसे खाएं

शहद और आंवले के रस में मिलाकर लेते हैं तो यह शरीर से मुक्त कणों को खत्म कर दर्द और सूजन को रोकता है।

गठिया में जामुन की छाल को उबालकर पीएं और इसके बचे हुए घोल का लेप जोड़ों पर लगा सकते हैं।

जामुन हिमोग्लोबिन बढ़ाकर खून की कमी को पूरा करता है।

जामुन में भुना हुआ जीरा और काला नमक मिलाकर खाने से एसिडिटी की समस्या दूर होती है।

तैलीय त्वचा है तो जामुन के पेस्ट से बना हुआ फेस पेक लगाएं।

गाय का दूध, नींबू, बेसन, बादाम का तेल और गुलाब जल की कुछ बूंदों के साथ जामुन के बीजों के पेस्ट से फेस पेक बनता है।

रोज सुबह खाना खाने के बाद जामुन के पत्तों को साफ कर चबाने से दस्त और पेट के अल्सर के लक्षणों में राहत मिलती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आस की डोर विश्वास की ओर

नारायण सेवा संस्थान ने मेरी आस की डोर विश्वास की ओर मेरी बेटी को नई जिंदगी दी। चिकित्सकों और साधकों ने बहुत ध्यान दिया। परिणाम स्वरूप बेटी को नया जीवन मिल। मैं संस्थान का दिल से बहुत बहुत धन्यवाद करती हूँ। मैं कविता यादव उम्र 23 छत्तीसगढ मुंगेली की रहने वाली हूँ। मेरे पति दुर्गेश यादव दूसरों के खेत में मजदूरी करते हैं। मेरी लड़की गोमिया 3 जन्म से ही एक पैर में टेढ़ेपन से ग्रसित थी। गरीबी के कारण आर्थिक हालात बहुत खराब हैं। लड़की के पैर की परेशानी से सभी बहुत परेशान और निराश थे। उसका बिलासपुर, रायपुर, मुंगेली, कुँवरधर आदि कितनी ही जगहों पर इलाज करवाया। 1 से 2 लाख रुपयों का खर्चा भी हो गया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। फिर एक दिन मेरी दीदी की भांजी ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया और आस्था चैनल के द्वारा पूरी जानकारी मिली। तब हम बच्ची को लेकर उदयपुर आये। संस्थान चिकित्सकों ने जाँच की फिर 2 मार्च 2022 को पहला ऑपरेशन कर प्लास्टर चढ़ाया गया। दूसरा ऑपरेशन 14 मार्च को हुआ और पैर में रिंग लगाई गई। इसके बाद घर लौट गए। एक माह बाद फिर आये और 19 अप्रैल 2022 को तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब बच्ची के पांव की स्थिति में सुधार भी दिख रहा है। हड्डी भी जुड़ रही है। संस्थान का दिल से आभार।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन

2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार

2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं

2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं

2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी

2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र

आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन

वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ

6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ

विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

सुन्दर कार्य चलते रहे। कल्पना जी का अजमेर में विवाह किया। लेकिन 4–5 दिनों बाद में बोम्बे ले गये। उस समय महाराष्ट्र में जनरल मैनेजर साहब बैंक की बड़ी कॉलोनी थी मधुबन में। उस समय उनका बड़ा बंगला। जब मैं महिने भर बाद बोम्बे गया– कल्पना से मिलने। मुझे लेने पधारे। पार्किंग जरा दूर करनी पड़ी। पार्किंग में गये गाड़ी में बैठे बंगले में ले गये। कल्पना ने प्रेम से कहा– पापा अब आपको सुबह 4:00 बजे चाय कौन पिलाता है? आँसू गिर पड़े। क्या प्यार होता है? पिता–पुत्री का क्या प्यार होता है? ये अनुभव किया जा सकता हैं। प्रभु सब मंगल ही करता है। सभी परम् आदरणीय है। पूज्य राजमल जी भाईसाहब का प्रेम बढ़ता चला गया।

बिसलपुर जवाई बांध के पास पाली जिला मैं सेवातीर्थ ही मानता हूँ उसको। अद्भुत लगता है जब हम बड़े गेट के पास पहुँचते हैं। कई स्मृतियाँ, कई सुहाने पल, अन्दर के गेट से प्रवेश करते ही नाकोड़ा भैरुजी का मन्दिर, और मन्दिर से निकलते ठीक सामने पूज्य राजमल जी भाईसाहब की कुर्सी टेबल पास में 5–7 कुर्सियाँ, सादा जीवन– उच्च विचार पास में परिसर टेलिफोन, पीछे के साईड़ में भोजन शाला, रसोई घर दायें और बाये वार्ड और बायीं तरफ ऑपरेशन थिएटर। बायीं तरफ गैलेरी में एक छोटा–सा कमरा– भाईसाहब के लिए। एक अटैची रखते थे, और भाईसाहब कहते थे मेरा सब कुछ इस अटैची में है।

ये देखिये, ये कागज देखिये बोले– ये लिफाफे भी आते हैं मेरे पास। खाली लिफाफे में से पत्र निकालकर बाद में लिफाफे को लिखने के काम में लेता हूँ। उसको बेकार नहीं फैंकता– देश का कागज है। बहुत अच्छा। ऐसा ही कमला जी का स्वभाव फीजूल खर्च नहीं करना। पानी बेकार में नहीं जाना चाहिए। लाईटें फीजूल में नहीं जलनी चाहिए, अच्छी बात है। बहुत अच्छा। कितनी कविताएं पढ़ लेते हैं, कितने ही गीत पढ़ लेते हैं। हर गीत के पीछे कुछ भावनाएं छुपी रहती है।

भवानीशंकरौ वन्देश्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः
स्वान्तःस्थमीश्वरम्।।

बहुत ऊँचे शब्द है। मैंने सब पर विश्वास किया। उस विश्वास का लाभ मिला। जिन्होंने हानि पहुँचायी थी वो बहुत कम थी। लाभ बहुत ज्यादा था। विश्वास के आधार पर ही नारायण सेवा बनी, और 1989 में मार्च–अप्रैल में रविवार को जब शिविर किया करते थे। यही विश्वास।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 466 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023